भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

16 जुलाई 2012

सब्यसाची पण्डा द्वारा शासक वर्गों के सुर में सुर मिलाते हुए हमारी पार्टी के खिलाफ लगाए गए तमाम जहरीले, बेबुनियाद और झूठे आरोपों को भाकपा (माओवादी) सिरे से खारिज कर देती है!

और गद्दारी के लिए उसे पार्टी से बहिष्कार करती है!

हमारी ओड़िशा सांगठनिक कमेटी (एस.ओ.सी.) के सचिव सब्यसाची पण्डा ने हमारी पार्टी के महासचिव के नाम 16 पृष्ठों वाला पत्र लिखकर 14 मई 2012 को मीडिया में जारी कर दिया। इस पत्र में उसने शासक वर्गों के सुर में सुर मिलाकर भाकपा (माओवादी) और उसकी अगुवाई में जारी क्रांतिकारी आंदोलन पर जहर उगलते हुए कोरी कल्पनाओं से कई बेबुनियाद और झूठे आरोप लगाए। पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को नुकसान पहुंचाने की बुरी नीयत से उसने इस पत्र को जारी कर मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद तथा सर्वहारा की अगुवा पार्टी से खुद को अलग कर लिया। पार्टी छोड़ने और जनयुद्ध की लाइन व क्रांतिकारी व्यवहार को त्यागने की खुलेआम घोषणा कर उसने अपने नव संशोधनवादी चेहरे को उजागर किया। उसने अत्यंत निंदनीय, नीचतापूर्ण व षड़यंत्रकारी तरीकों से पार्टी, क्रांति, शोषित जनता, खासकर ओड़िशा की शोषित जनता की मुक्ति से जुड़े महान उद्देश्यों के साथ विश्वासघात कर खुद को गद्दार साबित किया।

सब्यसाची पण्डा ने पहले कुछ समय तक सीपीएम में और उसके बाद सीपीआई (मा.ले.) (लिबरेशन) में काम किया था। बाद में क्रांतिकारी आंदोलन से प्रभावित होकर उसने दक्षिणपंथी लिबरेशन पार्टी को छोड़कर 1998 में भाकपा (मा.ले.) (पार्टी यूनिटी) में प्रवेश किया। क्रांतिकारी पार्टियों की एकता से वह भाकपा (मा.ले.) (पीपुल्सवार) और उसके बाद भाकपा (माओवादी) में बना रहा। 2003–05 के बीच ए.ओ.बी. एस.जेड.सी. सदस्य के रूप में, 2005 से ओड़िशा राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य के रूप में और 2008 से उस कमेटी के सचिव के रूप में काम करता रहा। क्रांतिकारी पार्टी में 15 साल के लम्बे अंतराल तक काम करने के बावजूद खुद को एक असली सर्वहारा क्रांतिकारी के रूप में ढालने में वह विफल रहा। उसके क्रांति–विरोधी व अवसरवादी राजनीतिक विचारों, रुझानों और व्यवहार की साथियों, कैडरों और सी.सी. कामरेडों ने कई बार आलोचना की। पिछले दिसम्बर में जब राज्य स्तर का विशेष प्लीनम आयोजित किया गया था, उसमें उसके खिलाफ कई आलोचनाएं उठी थीं। लेकिन उसने उनमें से कुछ को रस्मी तौर पर स्वीकार कर बाकी को टालमटोल कर दिया। एक सच्चे सर्वहारा क्रांतिकारी के तौर पर अपनी गलतियों को ईमानदारी से चिन्हित कर सुधार लेने की बजाए वह एक कायर की तरह क्रांतिकारी आंदोलन से भाग गया।

उसके 16 पृष्ठों वाले पत्र में झूठ, विकृतियां और सच को तोड़ने–मरोड़ने वाले कुतर्क ही थे, जबकि रत्ती भर भी सच्चाई नहीं थी। इसमें कोई शक नहीं कि इस पत्र को उसने ओड़िशा में हमारी पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को कमजोर कर, छिन्न–भिन्न कर, विनाश करने की ही नीयत से लिखा था। यह किसी से छिपी नहीं है कि महान क्रांतिकारी लक्ष्य को समर्पित, असीम कुरबानियों से नहीं डरने वाली, निस्वार्थ रूप से काम करने वाली, देश की मुक्ति के लिए कटिबद्ध और शोषित जनता के लिए आशा की किरण के रूप में हमारी पार्टी को प्राप्त प्रतिष्ठा को ध्वस्त कर, शासक वर्गों की सेवा में संलग्न होकर अपनी स्वार्थ राजनीति को साधने की बुरी मंशा ही पण्डा के इस पत्र के पीछे निहित थी। इतिहास में ऐसा अक्सर देखा गया है कि शासक वर्ग पण्डा जैसे लोगों को इस भ्रम के साथ सामने लाते हैं कि इससे क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ जारी अपने दुष्प्रचार को वैधता मिल जाएगी। क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत से देखा जाए तो दुश्मन ने पण्डा जैसे अवसरवादियों को सामने रखकर इस तरह की कोरी कल्पनाओं के सहारे कामरेड्स चारु मजुमदार, कन्नाई चटर्जी आदि हमारे कई नेताओं पर, पार्टी पर तथा क्रांतिकारी आंदोलन पर कई बार हमले किए थे।

पण्डा द्वारा लगाए गए आरोपों की तह में जाने से पहले हम एक बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि हमारी पार्टी समय–समय पर बैठकें, प्लीनम और अधिवेशन चलाती रहती है ताकि अपने कार्याचरण को सुधारा जा

सके तथा उसे बेहतर बनाया जा सके। अपनी गलतियों को चिन्हित कर उन्हें आलोचना–आत्मालोचना, समीक्षा और विशेष भूल सुधार अभियानों के जरिए सुधार लेती है। यह एक सतत प्रक्रिया है। यह सब जान–समझकर भी पण्डा अपने सोलह पन्नों वाले झूठे आरोपों के साथ सामने आया है तो उसके बुरे मंसूबों को साफ समझा जा सकता है। असल बात यह है कि चूंकि वह इस तरह की प्रक्रिया में भाग लेकर खुद को सुधारने के लिए तैयार नहीं है, इसलिए उसने पार्टी छोड़ने का मन बना लिया।

हालांकि पण्डा के सड़ांध से भरे आरोपों की फेहरिश्त काफी लम्बी है, लेकिन उनमें से प्रमुख निम्न प्रकार हैं –

1. माओवादियों के लिए विवेकहीन हिंसा और बेकसूर लोगों को मारना आम बात बन गया। वे अपने कैडरों को तथा भोलेभाले और बेकसूर पुलिस वालों को अंधाधुंध मार डालने के आदेश देते हैं। 2. पार्टी में तेलुगु और कोया कामरेडों का दबदबा कायम है। 3. माओवादी ही आदिवासियों का सबसे ज्यादा शोषण करते हैं। उनसे खाना बनवाते हैं। सामान उठवाते हैं। कार्यकर्ताओं को त्यौहारों पर भी अपने परिवारों से मिलने नहीं देते हैं। माओवादी आदिवासी महिलाओं का यौन शोषण कर रहे हैं। 4. गणपति आतंक और भय पर आधारित तानाशाही स्थापित करना चाहते हैं।

अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली जनता पर राजसत्ता अपने पास मौजूद तमाम हथियारों से दमनचक्र चलाती है। अगर यह लड़ाई जनता की मुक्ति के लक्ष्य से, यानी उत्पीड़ित जनता की राजसत्ता को कायम करने के लिए चलती हो तो राजसत्ता उस पर तीखे दमन पर उतारू हो जाती है। उसके पुलिस, अर्द्धसैनिक व फौजी बल आगे रहकर हमला करते हैं, जबकि उसके तमाम दूसरे अंग इस हमले में सुनियोजित, तालमेल के साथ, बेहद क्रूरता व षड़यंत्रकारी तरीकों से भाग लेते हैं। इसलिए इस हिंसा का मुकाबला करने के लिए जनता को सशस्त्र संघर्ष जरूरी हो जाता है। मार्क्सवाद के बारे में एबीसीडी जानने वालों को भी क्रांतिकारी हिंसा से सम्बन्धित इस बुनियादी व प्राथमिक विषय के बारे में जरूर मालूम होगा। जब पण्डा ने दक्षिणपंथी अवसरवादी सीपीआइ (एम.एल.) लिबरेशन पार्टी को छोड़ क्रांतिकारी पार्टी की लाइन को कबूलकर पार्टी में शामिल हुआ था और एकता कांग्रेस की लाइन को मान लिया था, तब उसे इसके बारे में मालूम नहीं था ऐसा तो नहीं हो सकता। चूंकि पण्डा ने खुद को पार्टी से अलग करना चाहा, इसलिए वह अवसरवादी तरीके से जहर उगल रहा है कि माओवादियों की हिंसा विवेकहीन है और वे निर्दोष लोगों को मार रहे हैं। इन सबका विरोध करने का दिखावा करते हुए वह यह उम्मीद कर रहा है कि भारतीय राजसत्ता उसके प्रति रहमदिली दिखा दे। जनता को कई प्रकार की हिंसा का शिकार बनाते हुए, उनके जीवन के तमाम पहलुओं को ध्वस्त करते हुए, उनकी हत्याएं करते हुए, बर्बर राजकीय दमन चलाने वाले और उसमें हिस्सा लेने वाले सरकारी सशस्त्र बल व अधिकारी तथा लक्ष्मणानंद, जगबंधु जैसे वर्ग–दुश्मन पण्डा को अब अचानक निर्दोष नजर आ रहे हैं। शासक वर्गों के चरणों पर नतमस्तक होने के लिए वह झूठे इलजाम लगाने के मामले में शत्रु–दुष्प्रचार को भी पीछे छोड़ रहा है।

'ओड़िशा में तेलुगु और कोया कामरेडों का दबदबा चल रहा है' वाला आरोप लगाकर पण्डा 'फूट डालो और राज करो' की उसी घिसी–पिटी व ओछी चाल चल रहा है जोकि दरअसल ब्रिटिश उपनिवेशवादियों और उनके नक्शेकदम पर चल रहे भारतीय शासक वर्गों की है। दीर्घकालीन जनयुद्ध की लाइन के अनुसार हमारी पार्टी के नेतृत्व में रणनीतिक दृष्टि से बिखरे हुए इलाकों से देशव्यापी स्तर में तथा छोटे इलाकों से व्यापक इलाकों में विस्तार करने के लिए और खुद को छोटी ताकत से एक बड़ी ताकत के रूप में विकसित करते हुए अंततः देशव्यापी पैमाने पर राजसत्ता हासिल करने के लिए क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण हो रहा है। इसके लिए पार्टी रणनीतिक दृष्टि से अपनी ताकतों को शुरू से ही विभिन्न इलाकों में तैनात करके काम कर रही है। स्थानीय स्तर पर जनाधार को बढ़ाते हुए पार्टी व जनसेना को विकसित करते हुए इलाकेवार राजसत्ता की स्थापना कर रही है। इस लाइन पर चलते हुए रणनीतिक तौर पर शक्ति संतुलन में बदलाव लाकर अंततः शहरों को घेरकर देशव्यापी राजसत्ता पर कब्जा करनी है। इसे ध्यान में रखते हुए हमारी पार्टी के हर सदस्य को देश के किसी भी हिस्से में जाकर काम करने के लिए तैयार रहना होगा। इतना ही नहीं, अंतरराष्ट्रीयवादी होने के चलते कम्युनिस्टों को दुनिया के किसी भी देश में या क्षेत्र में जाकर वहां की जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनकी मुक्ति के लिए काम करने को तैयार रहना चाहिए। भारतीय क्रांति के इतिहास पर नजर डाली जाए तो हम यह समझ सकते हैं कि अपने इलाकों व राज्यों को छोड़कर दूसरे इलाकों व राज्यों में जाने वाले कामरेडों के कड़े प्रयासों के फलस्वरूप ही देश के विभिन्न हिस्सों में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हो पाया है। इन कामरेडों ने भाषाएं सीखीं। वहां की जनता की संस्कृति का सम्मान किया। उनके साथ एकताबद्ध हुए। नए इलाकों में निर्मित आंदोलनों को ऐसे कामरेडों के सामूहिक परिश्रम के नतीजे के रूप में देखा जा

सकता है। पण्डा के संकीर्ण क्षेत्रीयवादी नजरिए के चलते दूसरे राज्यों से आए कामरेडों का ओड़िशा में आकर काम करना उसे कभी रास नहीं आया। ऐसे कामरेडों की निस्वार्थ भावना की प्रशंसा करने की बजाए उसने उनके और ओड़िया कामरेडों के बीच मतभेद पैदा करने के लिए षड़यंत्रकारी तरीकों व गुटबाजी से ही लगातार काम किया। आंदोलन की जरूरत के अनुसार दूसरे राज्यों से ओड़िशा में काम करने के लिए आने वाले कामरेडों के मामले में उसने क्षेत्रीय अंधराष्ट्रवाद का प्रदर्शन करते हुए नौकरशाहीपूर्ण, गैर–जनवादी व संकीर्ण तरीके से काम किया। वास्तव में ओड़िया जनता और ओड़िया कामरेडों ने उनके लिए और उनके साथ मिलकर काम करने के लिए आंध्रप्रदेश, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ से आए हुए कामरेडों का खुशी से ही स्वागत किया। इस सच्चाई को स्वीकार किया। हम आशा करते हैं कि पण्डा के साथ कार्यरत चंद कामरेड्स जनयुद्ध की लाइन के बारे में दोबारा चिंतन–मनन कर उसके झूठों को समझ लेंगे और उसकी साजिशों को समझकर उसका पर्दाफाश कर देंगे।

क्रांतिकारी आंदोलन के अंतर्गत आदिवासियों की मुक्ति का लक्ष्य त्याग देने वाले पण्डा 'माओवादियों के हाथों आदिवासियों का शोषण' के बारे में शासक वर्गीय हत्यारों की ही तर्ज पर हमारी पार्टी पर झूठे आरोप लगाते हुए मगरमच्छ के आंसू बहा रहा है जोकि उसके छलकपट का साफ सबूत है। पार्टी में रहते समय शारीरक श्रम में कभी भाग न लेने वाले पण्डा की आंखों पर जब शासक वर्गीय चष्मे सज गए, आदिवासी कामरेडों का स्वैच्छिक रूप से, अत्युन्नत क्रांतिकारी चेतना के साथ क्रांति के लिए अपनी सारी शारीरक शक्ति को बाहर लाकर काम करना 'माओवादियों के हाथों शोषण' के रूप में दिखाई दे रहा है। आखिर माओवादी कौन हैं? और आदिवासी कौन हैं? क्या पार्टी में काम करने वाले आदिवासी माओवादी नहीं हैं? क्रांति को छोड़कर शासक वर्गों की वकालत करने पर उतारू ठेठ अवसरवादी पण्डा को क्रांतिकारी आंदोलन के दौरान रोजमर्रा के जीवन में जरूरी व्यक्तिगत श्रम और सामूहिक जीवन में सैन्य, तकनीकी, उत्पादन–विकास, जन कल्याण आदि क्षेत्रों में आवश्यक श्रम, जन आंदोलन में जनता का विभिन्न प्रकार का श्रम माओवादियों द्वारा आदिवासी जनता के शोषण के रूप में दिखाई देना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सर्वहारा पार्टी में हरेक व्यक्ति अपने रोजमर्रा के जीवन में अपना–अपना काम कर लेते हैं। भार उठाते हैं। बीमार, शारीरक रूप से कमजोर और विशेष कामों में लगे साथियों की मदद दूसरे लोग करते हैं। दरअसल जनसेना प्रधान रूप से युद्ध का संचालन करते हुए अपने लिए जरूरी रसोई, भार उठाना आदि काम खुद ही कर लेती है। राष्ट्रीयता, लिंग, क्षेत्र आदि का फर्क किए बगैर हरेक को जनयुद्ध के अंतर्गत उपरोक्त काम करने ही होंगे। देश के विभिन्न गुरिल्ला जोनों में यही चलता आ रहा है। और चल रहा है। दरअसल हमारी पार्टी की संस्कृति जनवादी व समाजवादी संस्कृति है जिसमें स्त्री–पुरुषों के बीच, पढ़े–लिखे व अनपढ़ों के बीच तथा नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है। हमारी पार्टी के प्रति आदिवासियों के आकर्षित होने का यह एक अहम कारण है। हमारी पार्टी इसी संस्कृति को बड़े पैमाने पर, लाखों लोगों के बीच ले जा रही है।

राजसत्ता यह आरोप बार–बार लगा रही है कि माओवादी अपनी पार्टी में शामिल महिलाओं/आदिवासी महिलाओं को अत्याचाार व यौन प्रताड़ना का शिकार बनाते हैं। गद्दार बन चुके पण्डा ने भी माओवादियों पर शासक वर्गों की तरह बेहद नीचतापूर्ण तरीके से हमला किया है तो इसमें अश्चर्य क्या है? अतीत में हमारी पार्टी ने हर बार जो जवाब दिया आज भी इस पर हमारा वही जवाब है। हालांकि इस आरोप का अत्युत्तम जवाब दे रही हैं वे सैकड़ों महिलाएं जो हमारी पार्टी में भर्ती हो रही हैं, वे हजारों–लाखों महिलाएं जो क्रांतिकारी महिला संगठनों में सदस्यता ले रही हैं, वे महिलाएं जो आंदोलन के इलाकों में मौजूद हैं और वे सैकड़ों महिला साथी जो नक्सलबाड़ी के दिनों से लेकर पिछले 45 सालों से शोषित जनता की मुक्ति के लिए अपने प्राणों को कुरबान कर चुकी हैं।

1925 में भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के बाद, आंदोलन के अब तक के 90 से ज्यादा सालों के इतिहास पर नजर डाली जाए तो ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि कम्युनिस्ट पार्टी पिछले 25 बरसों में जनता, जन संस्कृति और जन जीवन के तमाम पहलुओं के साथ जितना ज्यादा एकताबद्ध हुई, उतना पहले कभी नहीं हुई थी। न सिर्फ एकताबद्ध हुई, बल्कि वह जन जीवन के राजनीतिक व सांस्कृतिक पहलुओं में से तमाम प्रगतिशील अंशों को ऊंचा उठाकर, उन्हें अपने अंदर समाहित कर, उनका और ज्यादा क्रांतिकरण कर रही है। पण्डा के इस आरोप को कि त्यौहारों पर घर देखने को इच्छुक कार्यकर्ताओं को जाने नहीं दिया जाता है, क्रांतिकारी जनता कतई विश्वास नहीं करेगी। जिन लोगों को क्रांतिकारी आंदोलन के साथ ज्यादा परिचय नहीं है, ऐसे लोगों को उस पर घृणा की भावना पैदा करने की नीयत से ही वह इस प्रकार अवसरवादी तरीके से हमला कर रहा है।

यह आरोप कि गणपति आतंक और भय पर आधारित तानाशाही स्थापित करना चाहते हैं, इतना हास्यास्पद है कि दरअसल इसके लिए स्पष्टीकरण की जरूरत ही नहीं है। भाकपा (माओवादी) किसी बुर्जुआई पार्टी जैसी कतई नहीं है। हमारी पार्टी ने तय किया है कि मौजूदा अर्द्ध सामंती व अर्द्ध औपनिवेशिक राजसत्ता को क्रांतिकारी हिंसा के जरिए ध्वस्त कर, नई जनवादी क्रांतिकारी सत्ता, यानी सर्वहारा की अगुवाई में मजदूर–किसान एकता की बुनियाद पर आधारित चार वर्गों – मजदूर, किसान, निम्न पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्गों की जनवादी तानाशाही की स्थापना हमारा फौरी लक्ष्य है, जबकि बाद में समाजवाद और साम्यवाद लाना अंतिम लक्ष्य है। ऐसा भी नहीं है कि यह सब पण्डा को मालूम नहीं है। संसदीय लोकतंत्र की आड़ में देश में मनमानी तरीके से तानाशाही चलाने वाली दलाल नौकरशाही बुर्जुआ व सामंती वर्गों की निरंकुश व्यवस्था से, जिसकी साम्राज्यवादियों से सांठगांठ है, समझौता करके उसमें अपनी जगह पक्की करने के इरादे से ही पण्डा कामरेड गणपति और हमारी पार्टी पर गलत आरोप लगा रहा है।

दरअसल पण्डा खुद ही ओड़िशा में अपनी तानाशाही स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। राज्य की विशेष प्लीनम में की गई समीक्षाओं और फैसलों को देखने के बाद उसने समझ लिया था कि पार्टी के कैडर उससे दबकर रहने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने उसके नौकरशाहाना व्यवहार और अन्य राज्यों के साथियों के प्रति गैर–जनवादी व संकीर्णतावादी रवैये की आलोचना की। यह पहचानते हुए कि नौकरशाहाना व्यवहार को जारी रखना संभव नहीं है, इस अवसरवादी ने पार्टी छोड़ने का फैसला लेकर तबसे अपनी पूर्व तैयारियों में तेजी लाई।

दरअसल, राज्य स्तरीय प्लीनम के आयोजन के बाद से उसने ओड़िशा राज्य प्रभारी सी.सी. कामरेड से संपर्क करना ही छोड़ दिया। तबसे, करीब छह महीनों तक वह अपने बयानों और साक्षात्कारों में लगातार पार्टी पर जहर उगलता रहा। इससे पार्टी में राजनीतिक व सांगठनिक समस्याएं उत्पन्न हुईं जिससे ओड़िशा के आंदोलन को तीव्र नुकसान पहुंचा। क्योंकि बहुत से मामलों में उसका रवैया विशेष प्लीनम के फैसलों, पार्टी लाइन और नीतियों के खिलाफ रहा। उसकी अगुवाई में जब इटली के सैलानियों को बंदी बनाया गया था, तब वह निहायत अवसरवादी तरीकों पर उतर आया। उसने समूचे ओड़िशा राज्य में एकतरफा संघर्षविराम की घोषणा की। ओड़िशा और उसके सीमावर्ती इलाकों के उल्लेखनीय हिस्से में जब दो–दो सीमावर्ती कमेटियां काम कर रही हों, तब उसका इस तरह घोषणा करना अनुचित था। इस तरह बाकी दो कमेटियों को आदेश देने का उसे कोई अधिकार भी नहीं था। उसके द्वारा एकतरफा संघर्षविराम की घोषणा के बाद जब एओबी के साथियों ने एक विधायक को बंदी बनाया और एक एसआई को गोली मार दी, तब उसने न सिर्फ एओबी के साथियों की खुलेआम आलोचना की, बल्कि यह तक कह दिया कि उनके लिए मारना फैशन बन गया।

ओड़िशा एसओसी के दायरे में समूची पार्टी द्वारा की गई समीक्षाओं को ताक पर रखकर पण्डा ने यह घोषणा की कि लक्ष्मणानंद, जगबंधु जैसे वर्ग–दुश्मनों का सफाया गलत था। दुश्मन के साथ हाथ मिलाकर उसने कामरेड निखिल के नाम से बयान जारी करते हुए अलग–अलग समुदायों व अलग–अलग राज्यों से आए हुए कामरेडों के बीच मतभेद पैदा करने की कोशिशें करते हुए एक जहरीली मुहिम शुरू कर दी। जब मीडिया में लगातार खबरें आने लगी थीं कि पण्डा पार्टी छोड़ने वाला है और एक नया ग्रुप बनाने वाला है, लगातार मीडिया के संपर्क में रहते हुए भी पण्डा की ओर से इस बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं आना महज इत्तेफाक नहीं था। साफ जाहिर है कि विशेष प्लीनम के बाद ही उसने पार्टी छोड़ने की योजना बनाकर खुलेआम अवसरवादी तरीकों और विघटनकारी गतिविधियों को अंजाम दिया। अपने पतन की पराकाष्ठा के रूप में उसने आखिरकार पार्टी छोड़ दिया।

ओड़िशा आंदोलन के दौरान सामने आई राजनीतिक समस्याओं पर दक्षिणपंथी अवसरवादी रुख अपनाते रहे पण्डा का पतन आखिर में संशोधनवाद के स्तर पर हुआ जो दीर्घकालीन जनयुद्ध की लाइन को ठुकरा देता है। उसके अंदर मौजूद संकीर्णतावादी, अतिजनवादी, अनुशासनहीन, गुटीय, गैर–सांगठनिक, पदलोलुपतावादी, नाम और प्रसिद्धि के पीछे भागने आदि रुझानों ने ओड़िशा में पार्टी और आंदोलन को बेहद नुकसान पहुंचाया। वह हमेशा सुखी जीवन की तलाश में रहता था। उसके अंदर मेहनती स्वभाव का बिल्कुल अभाव था। संगठित होने के क्रम से गुजर रही ओड़िशा राज्य पार्टी को हुए गंभीर नुकसान की स्थिति और सी.सी. पर दुश्मन का हमला केन्द्रित होने से जो गंभीर नुकसान पहुंचा था उसका इस अवसरवादी ने फायदा उठाया ताकि राज्य में विघटनकारी गतिविधियां जारी रखी जा सकें। इन सबकी जड़ उसके अंदर गहराई से मौजूद व्यक्तिवाद में है जो व्यक्ति को केन्द्र में रखता है। इसके अलावा, क्रांतिकारी आंदोलन पर साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के सम्पूर्ण सहयोग से भारत के शासक वर्गों द्वारा जारी प्रति–क्रांतिकारी युद्ध में 2009 के मध्य से आपरेशन ग्रीनहंट के नाम से खासा बदलाव आ गया। तबसे हमारे आंदोलन के खिलाफ जारी देशव्यापी व

चौतरफा भारी सैनिक हमले की पृष्ठभूमि में ही पण्डा के पतन व विश्वासघात को देखना होगा। इस हमले में पार्टी को देश भर में तीखे नुकसान हुए हैं। हालांकि ओड़िशा में आंदोलन अभी भी कमजोर ही है, लेकिन वह भी इस हमले का बुरी तरह शिकार हो रहा है। खासकर 2010 के आखिर से उसे गंभीर नुकसान झेलने पड़े। यह हमला और भी तीखा होने वाला है। भारत जैसे पिछड़े देशों की प्राकृतिक सम्पदाओं और संसाधनों को लूटने के रास्ते में बाधा बनने वाले संगठनों और लोगों को कुचलने के पीछे अहम कारण बहुराष्ट्रीय व देश की दलाल कार्पोरेट कम्पनियों के हित ही है। विश्व अर्थव्यवस्था को घेरने वाला वित्तीय संकट और जितना तीखा होगा, क्रांतिकारी पार्टी, उसके नेतृत्व, आंदोलन व शोषित जनता पर वे अपना हमला उतना ही तेज करेंगे ताकि वे खुद को उससे उबार सकें। इस पृष्ठभूमि में क्रांतिकारी पार्टी के नेताओं के लिए आंदोलन को चलाना तलवार की धार पर चलने के बराबर है। पार्टी के सच्चे नेता देश और दुनिया में छाई हुई बेहतरीन क्रांतिकारी परिस्थिति का फायदा उठाकर जनता को राजनीतिक रूप से तैयार करते हुए, जनयुद्ध को विकसित करने व क्रांति के पक्ष में बदलने की ही कोशिश करेंगे। इसके लिए क्रांतिकारी सिद्धांत के प्रति प्रतिबद्धता, दृढ़ इरादे, साहस के साथ फैसले लेना, पार्टी, जनसेना व जनता को एक सूत्र में बांधकर चलाना, बलिदानी भावना आदि जरूरी होते हैं। क्रांति की जरूरतों और कार्यभारों के मुताबिक खुद को और पार्टी को ढालने के लिए फौलादी संकल्प जरूरी हो जाता है। ऐसे लक्षणों के अभाव में कोई भी नेता क्रांति का नेतृत्व करने में या तो विफल हो जाएगा या फिर अक्षम हो जाएगा। ऐसे लोगों में से कुछ जंगे मैदान को छोड़कर कायरों की तरह भाग खड़े हो जाएंगे या फिर दुश्मन की शरण में चले जाएंगे। इस सच्चाई को छुपाते हुए ऐसे अवसरवादी और क्रांति–द्रोही शासक वर्गों का बचाव करते हुए पार्टी और पार्टी–नेतृत्व पर अनाप–शनाप आरोप लगाते रहते हैं। अतीत में न सिर्फ हमारी पार्टी के इतिहास में, बल्कि विभिन्न देशों की क्रांतियों में भी ऐसे गद्दार रहे थे। ऐसे लोगों में पण्डा आखिरी व्यक्ति भी नहीं होगा।

उपरोक्त सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए हमारी केन्द्रीय कमेटी ने पण्डा पर आए तमाम आरोपों को उसके सामने राजनीतिक रूप से पेश कर, उसे गलतियों से बाहर आने का मौका देते हुए, सुधारने की विशेष कोशिश शुरू की। लेकिन राज्य की विशेष प्लीनम के बाद से उसने सम्बन्धित सी.सी. कामरेड से पूरी तरह सम्बन्ध तोड़ लिया और पार्टी, आंदोलन व नेतृत्व पर लगातार खुला हमला करता रहा। इन सबकी पराकाष्ठा के रूप में मीडिया को यह जहरीला पत्र जारी करके खुद को गद्दारों में शामिल कर लिया। इसलिए हमारी केन्द्रीय कमेटी सब्यसाची पण्डा को पार्टी से बहिष्कार करती है। और हम इसकी सूचना ओड़िशा में मौजूद हमारी पार्टी के तमाम साथियों, समूची क्रांतिकारी जनता और देश के तमाम क्रांतिकारी खेमे को देते हैं।

ओड़िशा के साथियों, जन संगठनों और क्रांतिकारी व जनवादी जनता से हम अपील करते हैं कि वे हमारी पार्टी, आंदोलन और नेतृत्व के प्रति पण्डा द्वारा अपनाए गए शत्रुतापूर्ण व अवसरवादी रुख तथा शासक वर्ग–अनुकूल व जनविरोधी रुख का खण्डन करें। उसे, उसकी सड़ी–गली नव संशोधनवादी राजनीति और उसके द्वारा लगाए गए आरोपों को ठुकरा दें। इतिहास ने कई बार साबित किया है कि जो खुद ही खुद को बेजोड़ क्रांतिकारी नायक के रूप में दिखाते हैं या फिर शासक वर्गों द्वारा इस तरह फोकस किए जाते हैं, ऐसे गद्दार आखिरकार इतिहास के कूड़ेदान में ही फेंक दिए जाएंगे जबकि सच्ची क्रांतिकारी पार्टी, उसके नेता और उसकी अगुवाई में क्रांतिकारी जनता अनुपम साहस के साथ, भारी तूफानों से होकर अंतिम जीत की ओर अनवरत आगे बढ़ते रहेंगे। जनता ही इतिहास का निर्माता है, पण्डा जैसे नकली क्रांतिकारी नहीं। हमारी पार्टी को सम्पूर्ण विश्वास है कि ओड़िशा का सिक्का चलाते हुए शासक वर्गों की चरण–सेवा में जी–जान से जुट जाने वाले पण्डा जैसे गद्दारों को ओड़िशा की क्रांतिकारी जनता जरूर ठुकरा देगी तथा ओड़िशा के साथी व व्यापक उत्पीड़ित जनता भाकपा (माओवादी) की अगुवाई में क्रांति के पथ पर अग्रसर होंगे।

Anand

(आनंद)

पीबीएम, सीआरबी सचिव

केन्द्रीय कमेटी की ओर से

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)